भगवान शिव का वैदिक स्वरूप

*डॉ. अनामिका शर्मा

प्रस्तावना

पौराणिक शिव का आदि रूप वैदिक रुद्र को माना जाता है। ऋग्वेद में उनकी स्तुति में केवल तीन पूर्ण सूक्त कहे गए हैं इसके अतिरिक्त एक अन्य सूक्त में पहले छः मंत्र रुद्र की स्तुति में हैं और अन्तिम तीन सोम की स्तुति में। एक और सूक्त में रुद्र और सोम का साथ–साथ स्तवन किया गया है। इन सूक्तों में उल्लिखित उनके स्वरूप को देखते हुए पाश्चात्य विद्वान् मैक्डोनल का कथन है कि रुद्र विशुद्ध झंझावत का नहीं अपितु विनाशकारी विद्युत के रूप में झंझावत के विध्वंसक–स्वरूप का प्रतीक हैं। सौम्य रूप में रुद्र को 'महाभिषक्' कहा गया है। जिनकी औषधियाँ ठण्डी और व्याधिनाशक होती हैं। ऋग्वेद के उत्तर भाग में रुद्र द्वारा केशी के साथ विष–पान का भी उल्लेख है।

रुद्र अग्नि के ही प्रतीक है। अग्नि को रुद्र कहा गया है।

त्वम् अग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे।

रुद्र को 'मेधापति' की उपाधि दी गई है। इससे रुद्र और अग्नि का तादात्म्य झलकता है।

रुद्र मरूतों नामक देवताओं के पिता भी माने गये है। रुद्र का शरीर नितान्त बलशाली हैं। ऋग्वेद में वे क्रूर बतलाये गये हैं। वे स्वर्गलोक के रक्तवर्ण वराह हैं, वे सबसे श्रेष्ठ वृषभ हैं, वे तरूण हैं, उनका तारूण्य सदा टिकने वाला है। वे शूरों के अधिपति हैं और अपने सामर्थ्य से वे पर्वतों में टिकी हुई नदियों में बल का प्रवाह उत्पन्न कर देते हैं। उन्हें न मानने वाले मनुष्यों को वे अवश्य अपने बाणों से छिन्न–भिन्न कर देते हैं, परन्तु अपने उपासक मनुष्यों के लिये वे अत्यन्त उपकारी हैं, इसलिए वे 'शिव' नाम से भी पुकारे जाते हैं।

'स्वध्या च शम्भुः' शक्ति के सहित रुद्र एक ही है।

भगवान शिव को रुद्र इसलिये कहते है – ये 'रूत' अर्थात् दुःख को विनष्ट कर देते है। 'रूत्–दुःखम् द्रावयति–नाशयतीति रुद्रः'।

उनके हाथ में तलवार भी चमकती रहती है। इस तलवार के रखने के लिए उनके पास म्यान (निष›धि) है। वे वज्र भी धारण करते हैं। वज्र का नाम सृक है, शरीर की रक्षा करने के लिए वे अनेक साधनों को पहने हुए हैं। माथे की रक्षा करने के लिए शिरस्त्राण धारण करते हैं और देह के बचाव के वास्ते कवच तथा वर्म पहने हुए हैं।

अथर्ववेद में रुद्र को भव, शर्व, पशुपति तथा भूतपति नामों से कहा गया है।

रुद्र का निवास अग्नि में, जल में, औषधियों में तथा लताओं में हैं, पहले उन्होंने इन समस्त भुवनों की रचना कर इन्हें सम्पन्न बनाया हैं।

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य

ओषधीर्वीरुध आविवेश।

य इमा विश्वा भुवनानि चाकलृपे

तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये।

अथर्ववेद में शिवजी की स्तुति इस प्रकार की गई है –

पशुओं को उसके संरक्षण में रखकर उसे प्रसन्न किया गया है। वहाँ पर रुद्र को पहली बार 'पशुपति' कहा गया है।

'ईशावास्योपनिषद' में शिव का ईशरूप मिलता है। 'केनोपनिषद्' में यक्षावतार परब्रह्मरूप का वर्णन मिलता है। 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' में भगवान् शिव के सब जगह आंखे, मुँह और पैर का वर्णन प्राप्त होता है–

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो

विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।

इसी उपनिषद् में सर्वव्याप्ति का प्रदर्शन करते हुए कहा गया –

सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूतगुहाशयः।

सर्वव्यापी स भगवान् तस्मात् सर्वगतः शिवः।।

वह भगवान सब ओर मुख, सिर, ग्रीवा वाला हैं, समस्त प्राणियों के हृदय रूप गुफा में निवास करता है और सर्वव्यापी हैं, इसलिये वह कल्याण स्वरुप सब जगह पहुँचा हुआ है।

जैसे कण–कण में अनुस्यूत अग्नि एक ही है, किन्तु अनेक रूपों में हमारे सामने प्रकट होती है, वैसे भगवान् शिव एक होते हुए भी अनेक रूपों में प्रकट होते हैं।

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।

एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा।

रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च।।

रुद्र अपनी शासन–शक्तियों के द्वारा लोकों पर शासन करते हैं, वे भगवान् एक ही हैं। इसलिये विद्वानों ने जगत् के कारण के रूप में किसी अन्य का आश्रयण नहीं किया हैं वे प्रत्येक जीवन के भीतर स्थित है, समस्त जीवों का निर्माण कर पालन करते हैं तथा प्रलय में सबको समेट भी लेते हैं –

एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थु
र्य इमांल्लोकानीशत ईशनीभिः।
प्रत्यङ्.जनांस्तिष्ठति संचुकोचान्तकाले।
संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः।।

पत्नि का स्मरण होता है। जिसे हिमवत् की पुत्री माना जाता था। इसी कारण उनका नाम 'पार्वती' भी पड़ा।

उमासहायं परमेश्वरं प्रभुं

त्रिलोचनं नीलकण्ठं प्रशान्तम्।।

उमायुक्त परमेश्वर समर्थ है। अग्नि, विद्युत और सूर्यरूप तीन नेत्रों वाला, नीलकण्ड और तुरीयस्वरुप हैं।

रुद्र को गौरवास्पद पद प्राप्त है, उन्हें 'देवाधिपति' कहा गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में प्रजापति की सरस्वती के प्रति अगम्य गमन की कथा आई है। प्रजापति के अपराध से देवता क्रुद्ध हो जाते हैं, और उन्हें दण्ड देने के लिए रुद्र को नियुक्त करते हैं। इस कथा के माध्यम से अन्य देवताओं की अपेक्षा रुद्र का नैतिक उत्कर्ष दिखाया गया है। कौषीतकि ब्राह्मण में रुद्र के एक नाम 'अशनि' का भी उल्लेख हुआ हैं जो रुद्र के प्राचीन विद्युत स्वरूप की ओर संकेत करता है।

निष्कर्ष

भगवान शिव का प्रत्येक स्वरूप कल्याणकारी है। भक्ति एवं शक्ति दोनों ही भगवान शिव की हर छवि मंगल भाव देने वाली है।

***संस्कृत विभाग**
महर्षि दयानंद सरस्वति विश्वविद्यालय,
अजमेर (राज.)

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ऋग्वेद – १/११४, २/३३, ७/४६
2. ऋग्वेद – १/४३
3. ऋग्वेद – ६/७४
4. वैदिक माइथोलोजीज पृ.सं. ७८
5. मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुतीवृषभ मा सहूती।
   उन्नो वीरान् अर्पय भेषजेभिर्भिषक्तमं त्वां भिषजां श्रृणोमि।। (ऋग्वेद २/३३/४)
6. केश्यग्निं केशी विष केशी बिभर्ति रोदसी।
   केशी विश्वं स्वर्दशे केशीदं ज्योतिरुच्यते।। (ऋग्वेद १०/१३६/१)
7. ऋग्वेद २/१/६
8. गाथपतिम् मेधपतिम् रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छंयोः सुम्नम् ईमहे।। (ऋग्वेद १, ४३, ४)
9. इदं पित्रे मरुताम् उच्यते वचः, स्वादोः स्वादीयो रुद्रायवर्धनम्

रास्वा च नो अमृत मर्त्त–भोजनं, त्मने तोकाय तनयाय मृळ।। (ऋग्वेद १/११४/६)

10. ऋग्वेद – ३/१७/५
11. भवाशर्वो मृडतं माभि यातं भूतपति पशुपति नमोवाम्।
    प्रतिहितामायतां माविस्त्राष्टं मा नो हिसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः। (अथर्ववेद ११/२/१)
12. अथर्ववेद ७/९२/१
13. चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दशकृत्वः पशुपते नमस्ते।
    तवेमे पंच पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः।। (अथर्ववेद ११/२/९)
14. श्वेता. उप. ३/३
15. श्वेता.उप. ३/११
16. कठो.उ. ५/९
17. श्वेता.उप. ३/२
18. कैवल्य उ. ७